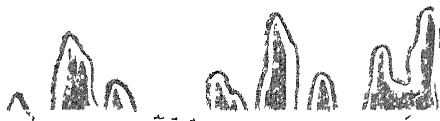
अनुभूतियों के घेरे



बालकृष्ण मिश्र